

Padma Shri



DR. (SMT.) SINDHUTAI SAPKAL (MAAI)

Dr. (Smt.) Sindhutai Sapkal (Maai) is a social worker from Maharashtra. She has dedicated her life for the last 45 years for the cause of poor and destitute.

2. Born on 1st July, 1948 at Pimpri Meghe village in Wardha district Maharashtra to Shri Abhimanji Sathe, a cowherd by profession, Smt. Sindhutai's father was keen on educating Sindhutai much against the wishes of her mother. Shri Abhimanji used to send her to school under the pretext of cattle grazing where she would use leaf of the Bharadi Tree as a slate as she could not afford a real slate because of financial reasons. Abject poverty family responsibilities and an early marriage forced her to quit formal education after she passed 4th grade.

3. At the tender age of 12, Smt. Sindhutai got married to Shrihari Sapkal a 30 year old cowherd in Wardha District. She became the victim of domestic violence. She used to sing and beg in order to feed herself and her baby. She had visited various temples travelling by train begging and singing. She was often joined by other beggars and she would feed these beggars too. She wandered from one place to another begging and singing, all alone with a baby to look after. She would sing heart rendering songs that would fetch money for her. She entrusted her little daughter, Mamata to Shrimant Dagdushet Halwai Trust so that she could be brought up with good standard of life.

4. Smt. Sindhutai started working whole heartedly for orphans and destitute. She has been pouring out her motherly love and affection on orphans and has been giving them food and shelter in whatever way she could. Lovingly they call her AAI. Her orphanages are different, generally orphans live in orphanages upto 18 years of age but she keeps her wards till they get their jobs, get married and settle in life. Her work is backed and funded by private donations and another help from various walks of life. The struggles and travels of her own life never let her sprit down. These have made her even stronger. Her heart rendering speeches, her oratory, her recitals of poem and gazals are so appealing. After the struggle of years, she is assisted by her daughter Mamata and son Deepak and her other grown up sons. She has been a Mother to many. She has nurtured over 1500 orphaned children.

5. As of today, Smt. Sindhutai has a grand family of 282 son-in-laws 49 daughter-in-laws. Many of the children whom she adopted are well educated lawyers, lecturer and some including her biological daughter are running their owned independent orphanages. One of her children is doing Ph.D. on her life. She has used the award money received through various award in buying land to make a home for her orphan children. After her dedication and sacrifices at present children have their own building at Pune with all facilities i.e. Computer Room, Study Room and all other required facilities. She has been giving speeches at various institutions across the globe to earn money for her children. She is also Working for Gau Rakshan named as Gopika Gau Rakshan Kendra at Wardha where more than 600 cows are living.

6. Smt. Sidhutai has been honored with more than 800 awards for her dedication and work including Ahilyabai Holkar Award in 2010 by the Government of Maharashtra; Basar Prashasti Award, by Karnataka Government. Samata Award by Maharashtra Government; Nari Shakti Puskar 2017 and National Award for Iconic Mother in 2013 etc.



डॉ. सौ. सिंधुताई सपकाळ (माई)

डॉ. सौ. सिंधुताई सपकाळ (माई), महाराष्ट्र की एक समाज सेविका हैं। उन्होंने अपने जीवन के पिछले 45 साल, गरीब और बेसहारा लोगों के प्रति समर्पित कर दिए हैं।

2. 1 जुलाई, 1948 को महाराष्ट्र के वर्धा जिले के पिंपरी मेघे गांव में जन्मी श्रीमती सिंधुताई के पिता श्री अभिमानजी साठे चरवाहे का काम करते थे। उनकी मां की इच्छा के खिलाफ उनके पिता उनको पढ़ाने—लिखाने के इच्छुक थे। श्री अभिमानजी मवेशियों को चराने के बहाने उन्हें स्कूल भेज देते थे, जहां वह स्लेट की जगह भराडी पेड़ के पत्तों पर लिखती थीं क्योंकि पैसों की कमी के कारण वह असली स्लेट खरीदने में असमर्थ थीं। घोर गरीबी और परिवार की जिम्मेदारियों के साथ—साथ बाल विवाह ने उन्हें चौथी कक्षा के बाद औपचारिक पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर कर दिया।

3. 12 साल की कम उम्र में श्रीमती सिंधुताई की शादी वर्धा जिले के 30 वर्षीय चरवाहे श्रीहरी सपकाळ के साथ कर दी गई। वह घरेलू हिंसा की शिकार बन गई। वह अपना और अपने बच्चे का पेट भरने के लिए गा—गाकर भीख मांगती थीं। उन्होंने ट्रेन में गाते और भीख मांगते हुए कई मंदिरों की यात्रा की। अक्सर दूसरे भिखारी भी उनके पास आ जाते थे और वह उन भिखारियों को भी खाना खिलाती थीं। वह भीख मांगते और गाते हुए अकेले एक जगह से दूसरे जगह घूमती रहती थीं, साथ ही उन्हें अपने बच्चे का भी ख्याल रखना पड़ता था। वह दिल को छू लेने वाले गीत गाया करती थीं जिनसे उन्हें पैसे मिलते थे। उन्होंने अपनी नन्हीं बेटी ममता, श्रीमंत दगडुसेठ हलवाई ट्रस्ट को सौंप दी ताकि उसका पालन—पोषण बेहतर ढंग से हो सके।

4. श्रीमती सिंधुताई ने अनाथ और बेसहारा लोगों के लिए पूरी लगन से काम करना शुरू किया। वह अनाथों के प्रति मातृत्व प्रेम और स्नेह लुटाती रही हैं और जैसे भी हो सके, उन्हें भोजन और छत उपलब्ध कराती रही हैं। वे प्यार से उन्हें आई कहते हैं। उनके अनाथालय अलग तरह के हैं, आम तौर पर अनाथ बच्चे 18 साल की उम्र तक अनाथालयों में रहते हैं लेकिन वह उन बच्चों को तब तक रखती हैं, जब तक उन्हें नौकरी न मिल जाए, उनकी शादी न हो जाए और उनका जीवन व्यवस्थित न हो जाए। उनका काम निजी दान और समाज के अलग—अलग क्षेत्रों से मिलने वाली मदद से चलता है। अपने जीवन की मुश्किलों और यात्राओं से उनका जोश कभी कम नहीं हुआ। इनसे उन्हें और ताकत मिली है। उनके मर्मस्पर्शी भाषण, वाक् शैली, कविताओं और गज़लों को गाने की कला बहुत सम्मोहक हैं। वर्षों के संघर्ष के बाद, उनकी बेटी ममता, उनका बेटा दीपक और उनके दूसरे बड़े बेटे उनके काम में हाथ बंटाते हैं। उन्होंने 1500 से ज्यादा अनाथ बच्चों को पाला है।

5. फिलहाल श्रीमती सिंधुताई का 282 दामादों, 49 बहुओं का एक विशाल परिवार है। उनके गोद लिए कई बच्चे पढ़—लिखकर वकील, लेक्चरर बन गए हैं और उनकी अपनी बेटी समेत कई लोग अपने—अपने अनाथालय चला रहे हैं। उनका एक बच्चा उनके जीवन पर पीएचडी कर रहा है। उन्होंने अलग—अलग पुरस्कारों से मिली राशि से अपने अनाथ बच्चों के लिए एक घर बनाने के लिए जमीन खरीदी है। उनके समर्पण और त्याग से, अब बच्चे पुणे में अपनी इमारत में रहते हैं, जिसमें कंप्यूटर रूम, स्टडी रूम और बाकी सभी जरूरी सुविधाएं हैं। वह अपने बच्चों के लिए पैसे कमाने के लिए दुनिया भर के कई संस्थानों में भाषण देती हैं। वह वर्धा में गोपिका गौ रक्षण केंद्र नामक एक गोशाला के लिए भी काम करती हैं, जहां 600 से ज्यादा गाय हैं।

6. श्री सिंधुताई को उनके समर्पण और कार्य के लिए 800 से ज्यादा पुरस्कार प्रदान किए गए हैं, जिनमें महाराष्ट्र सरकार द्वारा वर्ष 2010 में 'अहिल्याबाई होल्कर पुरस्कार', 'कर्नाटक सरकार द्वारा बसर प्रशस्ति पुरस्कार' महाराष्ट्र सरकार द्वारा समता पुरस्कार, वर्ष 2013 में 'आइकोनिक मदर' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार और वर्ष 2017 में 'नारी शक्ति पुरस्कार' शामिल हैं।